अन्तरा-शब्दशक्ति

स्पर्श नन्हों का

बाल कविताएँ

सीता गुप्ता

स्पर्श नन्हों का

(बाल कविताएँ)

सीता गुप्ता

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-86666-72-7"

अन्तरा-

शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय- १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१९- सीता गुप्ता

मूल्य- ६०.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी,वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

SPARSH NANHON KA BY SEETA GUPTA

वैधानिक चेतावनी- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका बनाम लेखनी

बड़े सौभाग्य की बात है कि ईश्वरीय कृपा एवं सभी के अपनत्व के फलस्वरूप "अंतरा शब्दशक्ति के विशेष सहयोग से "ओस की बूँद" प्रथम काव्य संग्रह एवं "गूँज हृदय की" द्वितीय काव्य संग्रह के पश्चात साहित्यकार स्वाभिमान सम्मान 2019 के संग आज मैं अपने तृतीय काव्य संग्रह "स्पर्श नन्हों का" बाल कविताओं के साथ आपके समक्ष हूँ।

कर्मभूमि बैलाडीला में शिक्षण कार्य करते हुए अनेक बार सोचती थी कि एक दिन बाल मन के लिए अवश्य कविताएँ लिखूँगी और आज वह दिन आ गया, जब माँ सरस्वती की कृपा से मेरी वह इच्छा पूर्ण हुई।

जैसा कि हम सभी एहसास करते हैं कि बाल मन बड़ा ही अबोध एवं निश्छल होता है। उसे प्रकृति सहित सान्निध्य में आने वाली प्रत्येक चीज प्रभावित करती है।

अपने इस काव्य संग्रह के माध्यम से मैंने अनेक विषय पर लिखते हुये बाल मन में उभरते भावों को ही लेखनी बद्ध किया है।

मैं आशा करती हूँ कि मेरे इस काव्य संग्रह को अभिभावक भी स्वीकार करते हुए सच्चे मन से सरल करते हुए बाल कविताओं को अपने बच्चों को समझाते हुए सिखाएंगे एवं प्रत्येक कविता के उद्देश्य से उन नन्हें-मुन्नों को अवगत

कराएंगे, तो सच्चे अर्थों में मेरी लेखनी को सार्थकता मिलेगी!

विशेष

नन्हें मुन्नों को मेरा ढेर सारा प्यार एवं आशीर्वाद सहित मेरी एक बात..

जीवन पथ पर हरदम तुम सब,
आगे ही बढ़ते जाना।
प्यार दुआओं और मेहनत से,
नाम अपना रोशन करना।
आये कितनी भी बाधाऐं,
उनसे तुम मत डरना।
अपने भीतर की क्षमता से,
दूर उन्हें कर देना।

सीता गुप्ता

अनुक्रमणिका

भूमिका बनाम लेखनी 5

1. साथी 7
2. तिरंगा 8
3. पानी की बचत 9
4. स्वच्छता 10
5. स्वास्थ्य धन 11
6. वर्षा 12
7. तितली रानी 13
8. बिल्ली 14
9. बोले कोयल 15
10. घड़ी 16
11. सूरज 17
12. चंदा मामा 18
13. पेड़ 19
14. गुरु जी 20
15. मेहनत का रंग 21
16. चींटी 22
17. दादी की सीख 23
18. माँ 24
19. प्यारी बहना 25
20. चाचा की नसीहत 26
21. विद्यालय 27
22. दिवाली 28
23. मेरा भारत 29
24. हिन्दी 30
25. गर्मी की छुट्टी 31

26. अभिलाषा 32

साथी

आओ साथी धूम मचाएँ,
मिलकर हम सब खेलें।
लेकिन ये हम कभी न भूलें।
समय पर बस्ता खोलें,

अच्छे-अच्छे दोस्त बनाएँ,
जो हों मन के सच्चे।
आगे-आगे हम बढ़ जाएँ,
कभी न हों हम कच्चे।

सभी विषय को हम सब समझें,
किसी को कम न समझें।
सब विषय की अपनी मंजिल,
ये सब अभी से समझें।

विषय अलग हों राह अलग हो।
पर हों दृढ़ के पक्के ।
एक दिशा में आगे बढ़कर,
हम बन जाएँ पक्के ।

मात-पिता रोशन हो जाएँ,
हम जो नाम कमाएँ।
घर समाज स्कूल हमारी,
हमें देख मुस्कायें।।

तिरंगा

तीन रंग का अपना झंडा,
इसे तिरंगा कहते हैं।
इस झंडे को शीश झुकाकर,
इसका गाना गाते हैं।

केशरिया बलिदान का सूचक,
हरा रंग खुशहाली है।
सफेद रंग शांति का सूचक,
नीलचक्र गतिशाली है।

भारत की पहचान तिरंगा,
करते इसे प्रणाम हैं।
इसी तिरंगे के कारण तो,
मेरा देश महान है।

हिन्दू,मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई,
सबको इससे प्यार है।
सबको एक सूत्र में बाँधे,
यही तो इसकी शान है।

वीरों को ये नमन है करता,
न्यौछावर उन पर होता है।
जब भी कोई वीरगति पाता,
मान तिरंगा देता है।।

पानी की बचत

पानी की हर बूँद कीमती,
इसको हमें बचाना है।
रहे सुरक्षित, कल का जीवन,
सबको ये समझाना है।

बूँद से नदियाँ, बूँद से गागर,
बूँद से जीवन आस है।
बूँद नहीं जो हो गगरी में,
रुकने लगती साँस है।

बात बड़ों की हमें समझना,
जल को हमें बचाना है।
इसकी कीमत हम सब समझें,
व्यर्थ नहीं बहाना है।

जल ही कल है, जल जीवन है,
मिटती जब तक प्यास है।
मीठी बूँद है, मोती जैसी,
ये सबको एहसास है।

बूँद नहीं है खारा पानी,
इसको हमें बचाना है।
रहे सुरक्षित सबका जीवन,
सबको ये समझाना है।।

स्वच्छता

मातृभूमि को स्वच्छ रखने,
स्वच्छता अपनाना है।
घर-आँगन, चौबारे, गलियाँ,
स्वच्छ हमें अब रखना है।

विद्यालय विद्या का मंदिर,
इसे तो स्वच्छ रखना है।
आस-पास जो भूमि अपनी,
उसे भी स्वच्छ रखना है।

स्वच्छता जब होती है तो,
स्वस्थ तन-मन होता है।
स्वच्छता और स्वास्थ्य में,
आपस का रिश्ता होता है।

स्वास्थ्य से खुशहाली और
खुशहाली समृद्धि है।
समृद्धि जो बनी रहे तो,
देश की खुशहाली है।

देश की खुशहाली से,
जन-जन का जीवन धन्य है।
स्वच्छ हो धरती स्वच्छ हो अंबर,
यही जीवन का मंत्र है।।

स्वास्थ्य धन

स्वास्थ्य धन जो पाना हो तो,
सजगता को तुम अपनाओ।
जीवन में खुशहाली पाने,
पहले अपना स्वास्थ्य बनाओ।

नीम-निबौरी भले ही कड़वी,
उसके मंजन-साबुन लाओ।
निरोगी काया को पाकर,
हरदम, हरक्षण मुस्कुराओ।

ताजी सब्जी फलों को लाकर,
सबसे पहले उनको धोओ।
रसीले फलों को खाकर,
पाचन तंत्र को दुरुस्त बनाओ।

पिज्जा बर्गर जंक फूड से,
थोड़ी दूरी आज बढ़ाओ,
पेप्सी कोला और मिराण्डा,
कभी-कभी ही हाँथ लगाओ।
जैसा मौसम वैसा भोजन,
परंपरा पर चलते जाओ।
निरोगी काया को पाकर,
जीवन में खुशहाली पाओ।

वर्षा

नन्हीं बूँद धरा पर आई,
संग में अपनी सखियाँ लाई।
नाचे मोर-मोरनी मुस्काई ,
रिमझिम-रिमझिम बारीश आई।

मेंढक ने आवाज लगाई,
कोयल ने अब ली बिदाई।
खेतों में हरियाली छाई,
रिमझिम-रिमझिम बारीश आई।

भर गए सारे ताल-तलैयाँ,
गरमी से अब राहत पाई।
बादल गरजे बिजली चमके,
देख झमाझम बारीश आई।

कान्हा की जन्माष्टमी आई,
गणेशा ने धूम मचाई।
बारीश में हम सब भी नाचें,
कितनी सुंदर वर्षा आई।

कागज की वो नाव हमारी ,
जहाँ-तहाँ चलती है भाई।
सारे साथी झूमके नाचे,
कितनी सुंदर "वर्षा " आई।

तितली रानी

मेरे घर की बगिया में तो,
तितली रानी आती हैं।
फूल-फूल के पास में जाकर,
वो तो बातें करती हैं।

पर जो पास मैं जाता हूँ तो,
दूर-दूर उड़ जाती है।
मुझको दौड़ाती है वो तो,
हाँथ नहीं वो आती है।

कितनी सुंदर कितनी चंचल,
मुझको बड़ा सताती है।
मैं तो प्यार करता हूँ उससे,
पर वो दूर उड़ जाती है।

है फूलों से तो बातें करती,
मुझे देख उड़ जाती है।
तितली रानी कितनी सुंदर,
पास नहीं क्यों आती है?
रोज सबेरे मेरी बगिया,
तितली रानी आती है।
कितने सुंदर पंख हैं उसके,
मेरे मन को भाती है।।

बिल्ली

बिल्ली बोली म्यांऊँ-म्यांऊँ,
क्या मैं घर के अंदर आऊँ?
मम्मी बोली न-न –न,
जाओ! अभी तुम आना न।

अब बिल्ली चुपके से आई,
दबे पाँव वह अंदर आई।
मम्मी के किचन में जाकर,
दूध-मलाई उसने खाई।

अब बिल्ली ने दौड़ लगाई,
उठा पटक भी कुछ मचाई।
सारे घर को वो दौड़ा दी,
लेकिन हाथ नहीं वो आई।

फिर बिल्ली ने घात लगाई,
दबे पाँव फिर अंदर आई।
यहाँ-वहाँ नजरें दौड़ाकर,
मन ही मन वह फिर मुस्काई।

पर.. दादू ने देख लिया जब,
बिल्ली पर तो शामत आई।
दादू ने जब छड़ी लगाई,
बिल्ली बोली सॉरी भाई।।

बोले कोयल

आमों की डाली पर बैठी,
कोयल गीत सुनाती है।
अपनी मीठी वाणी से वो,
कुछ संदेशा देती है।

मीठी वाणी सब कोई बोलो,
कड़वाहट से नाता तोड़ो।
मीठे-मीठे आम को खाकर,
अमृत रस जीवन में घोलो।

काली है पर मीठा गाती,
यही बात सिखलाती है।
रूप रंग पर तुम मत जाओ,
दुनिया को समझाती है।

मेरे घर के आम के पेड़ पर,
काली कोयल आती है।
कुहू-कुहू का गीत सुनाकर,
सबका मन बहलाती है।

उसके संग फिर कुहू-कुहू में,
हम सब बच्चे गाते हैं।
कोयल रानी के संग गाकर,
ढेरों खुशियाँ पाते हैं।।

घड़ी

टिक-टिक, टिक-टिक घड़ी है चलती,
हरपल हरक्षण आगे बढ़ती।
कभी न थकती कभी न रुकती,
समय की कीमत हमें बताती।

आगे-आगे ही बढ़ना है,
पल-पल सबको है सिखलाती।
रुकने का तुम नाम न लेना,
यही बात सबको समझाती।

समय का पहिया कभी न रुके,
घड़ी ही हमको है सिखलाती।
बीता समय कभी न लौटे,
हरपल हमको है बतलाती।

कहीं कलाई पर वो सजती,
कहीं मेज पर खड़ी वो रहती।
दीवारों पर जब टँग जाती,
घर की शोभा है बढ़ जाती।

सारे घर को अनुशासन का,
नितदिन घड़ी है सबक सिखाती।
समय बड़ा अनमोल कीमती,
सारी दुनिया को सिखलाती।।

सूरज

रोज सबेरे सूरज आकर,
सबको ये समझाता है।
जल्दी सोना समय से उठना,
सुंदर बात सिखाता है।

समय से अपने काम है करना,
सबको ये समझाता है।
रोज सबेरे सूरज आकर,
सबको पाठ पढ़ाता है।

आलस से तुम नाता तोड़ो,
अच्छी आदत तुम सब पकड़ो।
समय से खेलो समय पर पढ़ लो,
यही बात समझाता है।

जीवन में आगे बढ़ने की,
सुंदर सीख सिखाता है।
अच्छे-अच्छे कार्य करो सब,
यही बात समझाता है।

रोज सबेरे सूरज आकर,
जग को वो चमकाता है।
अच्छे कार्य से खुशियाँ मिलती,
यही बात समझाता है।।

चंदा मामा

चंदा मामा जैसे आते,
संग में अपनी ठंडक लाते।
सारे जग को शीतल करके,
सुख की मीठी नींद सुलाते।

झिलमिल-झिलमिल तारों के संग,
महफिल अपनी खूब जमाते।
सुंदर मीठे सपने देकर,
परी लोक में वो ले जाते।

परी लोक में जाकर हम तो,
सारे साथी धूम मचाते।
अपने मन की मस्ती करके,
सारे जहाँ की खुशियाँ पाते।

कभी हम आँख-मिचौनी खेलते,
कभी वहाँ पर दौड़ लगाते।
परी लोक की उस धरती पर,
ढेर सारी खुशियाँ पाते।

परियों के संग खेल-खेलकर,
हम बच्चे सारे खुश होते।
लेकिन.. जब वो नींद है खुलती,
अरे... हम तो बिस्तर में होते।।

पेड़

पेड़ हमारे जीवन रक्षक,
गुरू जी हमें बताते हैं।
पेड़ ही ऑक्सीजन हैं देते,
सब हमको बतलाते हैं।

फल-फूल और छाया सबको,
नितदिन पेड़ ही देते हैं।
परोपकार है गुण अनोखा,
पेड़ हमे सिखलाते हैं।

इनकी डाली पर तो पक्षी,
अपने घर बनाते हैं।
उन डाली पर झूलें हम भी,
गीत खुशी के गाते हैं।

पेड़ प्रदूषण दूर हैं करते,
पर्यावरण बचाते हैं।
हरी-भरी धरती को दुल्हन,
पेड़ ही तो बनाते हैं।

इन पेड़ों की करो रखवाली,
ये धरती की शान हैं।
पेड़ों से ही सबका जीवन,
पेड़ बड़े महान हैं।

गुरु जी

मेरे गुरु जी मुझको भाए,
एक-एक अक्षर मुझे सिखाए।
हर शब्द का अर्थ बताए,
मेरे गुरु जी मुझको भाए।

दुविधा में मन जब भी आया,
मेरे सिर पर हांथ फिराए,
क्या गलत है क्या सही है,
अंतर मुझको वो समझाए।

मेरे मन के तम को मिटाकर,
ज्ञान दीप की ज्योति जलाए।
नैतिकता का पाठ पढ़ाकर,
संस्कार वान मुझे बनाए।

अच्छा बनना सदा ही पढ़ना,
समय की कीमत वो बतलाए।
मंजिल को हासिल करने की,
सदा गुरु जी राह बताए।

सदा बड़ों का आदर करना,
छोटों को स्नेह बताए।
दया-भाव को मन में रखना,
सही कर्म की राह बताए।
"मेरे गुरु जी मुझको भाए"

मेहनत का रंग

रोज सबेरे नन्हीं चिड़िया,
दाना लेने जाती है।
अपनी मेहनत के बलबूते,
घर-संसार चलाती है।

नहीं संबल है नहीं सहारा,
नहीं आस वो रखती है।
तिनका-तिनका जोड़ जोड़कर,
अपना घर बनाती है।

आँधी आए तूफाँ आए,
कभी नहीं वो डरती है।
अपने पंखों की ताकत से,
उँची डाल पर जाती है।

हरी-भरी डाली पर अपना,
सुंदर घर बनाती है।
हरा-भरा संसार रहे ये,
यही दुआएँ देती है।

गीत खुशी के वो है गाती,
खुश रहना सिखलाती है।
खुद की मेहनत रंग है लाती,
सबको ये बतलाती है।

चींटी

छोटी सी चींटी को देखो,
पर्वत पर भी चढ़ती है।
अपने वजन से चार गुना वो,
वजन उठाकर चलती है।

कभी न थकती कभी न रुकती,
सांस नहीं वो लेती है।
सही राह पर चलते-चलते,
मंजिल हासिल करती है।

भारी-भरकम हाथी भी तो,
चींटी से डर जाता है।
इसीलिए तो कदम-कदम पर,
फूँक-फूँक कर चलता है।

छोटी चींटी सीख ये देती,
मिलकर सबको रहना है।
अपने संगी-साथी सबको,
सदा साथ ही रखना है।

आपस में वो बातें करती,
तब ही आगे बढ़ती है।
छोटी सी वो चींटी लेकिन,
मंजिल पाकर रहती है।

दादी की सीख

मेरी दादी ने सिखलाया,
मिलकर साथ है रहना।
प्रभु चरणों में शीश झुकाकर,
समय पर स्कूल जाना।

सदा बड़ों का आदर करके,
आशीष उनका पाना।
पशु-पक्षी से प्यार करके,
खूब दुआएँ पाना।

दुआओं में इतनी ताकत,
दूर मुसीबत होती।
आती हुई बाधाएँ भी फिर,
घबराकर चलीं जातीं।

ईर्ष्या-भेदभाव नहीं रखना,
निश्छल सबसे रहना।
लेकिन अपनी बुद्धि बल का,
सदा प्रयोग करना।

पढ़ लिखकर आगे है बढ़ना,
ध्यान सदा ये रखना।
मात-पिता संग विद्यालय का,
नाम रोशन करना।

माँ

दुनिया में जो सबसे सुंदर,
वो है प्यारी माँ।
जिसका आँचल बड़ा कीमती,
वो है मेरी माँ।

प्रेम का रस जो है बरसाती,
वो है प्यारी माँ।
शाबासी दे पीठ ठोंकती,
वो है मेरी माँ!

संस्कार को जो सिखलाती,
वो है प्यारी माँ।
दया-धर्म का पाठ पढ़ाती,
वो है मेरी माँ!

हरपल-हरक्षण ध्यान जो रखती,
वो है प्यारी माँ।
सुंदर भोजन रोज कराती,
वो है मेरी माँ !

राजा बेटा जो है कहती ,
वो है प्यारी माँ।
मुझको जो है गले लगाती,
वो है! "मेरी माँ।"

प्यारी बहना

जब रक्षाबंधन आता है,
हम दोनों खुश हो जाते हैं।
फिर खुशी-खुशी हम बहना से,
सुंदर राखी बंधवाते।

हर दिन हर पल हम दोनों ही,
संग साथ-साथ में रहते हैं।
सारी खुशियाँ और सब कुछ ही,
हम मिलकर साझा करते हैं।

झगड़ा होता है कभी-कभी,
पर झट से हम मिल जाते हैं।
हम दोनों की उस हरकत पर,
सब खूब मजा फिर लेते हैं।

उसका मैं प्यारा भैया हूँ,
वो मेरी प्यारी बहना है।
हम दोनों में है प्यार बड़ा,
ये सदा सभी का कहना है।

वो मेरी प्यारी गुड़िया है,
मैं उसका प्यारा दादा हूँ।
मैं उसकी रक्षा करूँगा,
मैं खुद से करता वादा हूँ।

चाचा की नसीहत

पंख मिले हैं पक्षी को जो,
उँची उड़ान उसे देना।
सोने का पिंजरा बनवाकर,
उसे कैद तुम मत करना।

अपने प्यार का लालच देकर,
बंधन में उसे मत रखना।
उसकी आँखों के भीतर के,
आँसू को भी देख लेना।

खुली जेल के कैदी सा भी,
पक्षी को तुम मत करना।
ईश्वर से उसे पंख मिले हैं,
उसे उड़ान तुम दे देना।

उनकी दुनिया रहे सुंदर सी,
कोशिश सदा ही ये करना।
कभी किसी पक्षी को कहीं भी,
कैद कहीं तुम नहीं करना।

पक्षी हैं प्रकृति के रक्षक,
बात याद ये रखना।
हरी-भरी धरती है इनसे,
सदा मान उन्हें देना।

विद्यालय

विद्यालय विद्या का आलय,
नितदिन हम यहाँ आते हैं।
ज्ञान दीप की ज्योति दिखाता,
विद्यालय इसे कहते हैं।

विद्यालय विद्या का मंदिर,
प्रसाद ज्ञान का पाते हैं।
अलग-अलग विषयों से हम तो,
नया ज्ञान फिर पाते हैं।

अच्छे-अच्छे मित्र हमारे,
शिक्षक गले लगाते हैं।
प्रेम की गंगा आशीष देकर,
हमको पाठ सिखाते हैं।

मन लगाकर पढ़ते हम भी,
प्रकाश ज्ञान का पाते हैं।
विद्यालय है प्यारा हमको,
प्रेम इसे हम करते हैं।

दया-भाव और ईमानदारी,
नैतिक बल बढ़ाते हैं।
सुचरित्र से सजकर हम तो ,
खुशी- खुशी घर जाते हैं।।

दिवाली

अंधकार को दूर भगाने देखो,
देखो आज दिवाली आई।
घर- आँगन को खूब सजाने,
देखो आज दिवाली आई |

खील- बताशे मीठा लेकर,
देखो आज दिवाली आई।
फटाखे- फुलझड़ियाँ लेकर,
देखो आज दिवाली आई।

गली-गली में दीप जलाने,
देखो आज दिवाली आई।
आओ हम सब दीप जलाएँ,
देखो आज दिवाली आई।

लक्ष्मी को अपने संग लेकर,
देखो आज दिवाली आई।
उनकी पूजा हम सब कर लें,
देखो आज दिवाली आई।

सबको मुस्काने देने को,
देखो आज दिवाली आई।
मिलकर हम सब खुशी मनाएँ,
देखो आज दिवाली आई।।

मेरा भारत

देश हमारा सबसे प्यारा,
भारत जिसको कहते हैं।
राम-रहीम की पावन धरती,
जहाँ अल्ला- ईसा रहते हैं।

ईद-दिवाली-होली जहाँ पर,
मिलकर खूब मनाते हैं।
बैसाखी और क्रिसमस पर यहाँ,
मिलकर खुशियाँ पाते हैं।

पावन नदियाँ बहें जहाँ पर,
मीठी जिनकी धार है।
सारे तीर्थों के दर्शन से,
खुशियाँ अपरम्पार हैं।

हम बच्चे भी मिलकर रहते,
भारत देश महान है।
संग में खेलें संग में झूमें,
मेरा देश महान है।

सुख-दुख में सब साथी होते,
नहीं भेद हम रखते हैं।
ऐसे सुंदर भारत में हम,
खूब खुशी से रहते हैं।।

हिन्दी

हिन्दी है हमारी भाषा,
हिन्दी से हम सबकी शान।
हिन्दी ही पहचान हमारी,
हिन्दी से है हिन्दुस्तान।

देवनागरी लिपि है जिसकी,
अलग- थलग इसकी पहचान।
उच्चारण संग बोली जाती,
हिन्दी भाषा बड़ी महान।

रूप सरलतम बड़ा ही इसका,
पढ़ना-लिखना है आसान।
मन लगाकर जो भी सीखे,
उसे बनाती ये महान।

माता जैसा हृदय है इसका,
हिन्दी तो है बड़ी विशाल।
सबको खूब समाहित करती,
हिन्दी भाषा बड़ी महान।

मुझको भी है हिन्दी प्यारी,
मेरी भी हिन्दी है शान।
भारत की पहचान है हिन्दी,
जय हिन्दी जय हिन्दुस्तान।।

गर्मी की छुट्टी

गर्मी की छुट्टी जब आती,
खुशियाँ बढ़ती जाती हैं।
मामा-नाना घर जाने की,
जल्दी कितनी मचती है।

भाई-बहन सब मस्ती करते,
खूब ठहाके लगते हैं।
अपनी-अपनी शैतानी की,
चर्चा खूब करते हैं।

मौसी जी भी जब आ जाती,
धूम वहाँ पर मचती है।
अपनी-अपनी स्कूल की फिर,
सुंदर बातें होती हैं।

ड्रीमलेंड में झूला झूलें,
आइस्क्रीम फिर खाते हैं।
चौपाटी की चाट को खाकर ,
फिर वापस घर आते हैं।

मामी सुंदर भोज कराती,
स्वादिष्ट पकवान हम खाते हैं।
सीख धरोहर नानी की हम,
अपने संग में लाते हैं।।

अभिलाषा

पंख हमारे जो होते तो,
हम भी थोड़ा उड़कर आते।
दूर-दूर तक नीलगगन में,
पक्षी जैसे हम उड़ पाते।

नदिया पर्वत झील और सागर,
सारे हम भी देख के आते।
पंख हमारे जो होते तो,
हम भी थोड़ा उड़कर आते।

प्यार करें सब एक दूजे से,
ये संदेशा घर-घर देते।
स्वच्छ रखो भारत को अपने,
घर-घर में सबको समझाते।

मातृभूमि की सेवा करके,
इसका हर कोई मान बढ़ाओ।
प्रदूषण को दूर भगाकर,
पर्यावरण को आज बचाओ।

शुभ संदेशा घर-घर देने,
हम जल्दी से पहुँच ही जाते।
पंख हमारे जो होते तो,
हम भी थोड़ा उड़कर आते।।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - श्रीमती सीता गुप्ता
पति - श्री आर.के.गुप्ता
माता - श्रीमती त्रिवेणी सरावगी
पिता - स्व.श्री ललता प्रसाद सरावगी
जन्म - 25.05.1957, जबलपुर (मध्यप्रदेश)
शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी), एम.ए. (समाजशास्त्र), बी.एड.
पता - सीता गुप्ता, सी/ओ. आर.के.गुप्ता, जिप्सी-1, गणपति विहार, पोटिया कला रोड 'दुर्ग', जिला- दुर्ग (छ.ग.)
मो.नं. - 08839445051
ई मेल - sitarkgupta@gmail.com
विधा - काव्य लेखन
कार्यक्षेत्र - सेवा निवृत्त वरिष्ठ शिक्षिका एन.एम.डी.सी. लिमिटेड (बी.आई.ओ.पी.सी. से. स्कूल), किरन्दुल (छ.ग.)
प्रकाशन - ओस की बूँद (काव्य संग्रह), गूँज हृदय की (काव्य संग्रह) एन.एम.डी.सी. लिमि.- बैलाडीला, लौह अयस्क खान, किरन्दुल कॉम्लेक्स की 'सर्जना' पत्रिका में रचनाएं प्रकाशित, लक्ष्मी पब्लिकेशन की 'कुछ शिक्षक कवि-2' में रचना प्रकाशित एवं लोकजंग में रचना प्रकाशित हुई।
सम्मान - वुमन अवार्ड 2018 सम्मान, हिन्दी कलमकार सम्मान 2019,अंतरा शब्दशक्ति, साहित्यकार स्वाभिमान सम्मान 2019
बैलाडीला क्षेत्र में इंटुक यूनियन द्वारा 'बेस्ट टीचर्स' अवार्ड एवं अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष 2016 के कार्यक्रम में बैलाडीला यूनियन एस.के.एम.एस. युनियन द्वारा 2016 के अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष में विशेष सम्मान।
उपलब्धि - पर्यावरण स्लोगन, प्रथम पुरस्कार पुरस्कृत बोर्ड के नाम के साथ बैलाडीला में मुख्य सड़क के किनारे आज स्थापित है। - एक बूँद से सजता है, सीप में मोती ।
उद्देश्य - बाल मन सदैव ही निश्छल एवं अबोध होता है जिसमें प्रकृति सहित सानिध्य की अनेक चीजें उसे प्रभावित करती है, अत: बाल मन की उसी कोमल भावना को अपनी लेखनी द्वारा दिशा एवं संदेश देने का प्रयास है।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-86666-72-7
मूल्य- 60/-